ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

सतत् पोषणीय विकास : प्रमुख मुद्दे एवं चुनौतियाँ

डॉ0 आलोक कुमार पाण्डेय*
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
के0 बी0 महिला महाविद्यालय, विभावि, हजारीबाग (झारखण्ड)

डॉ0 संजय कुमार साह
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
विभावि, हजारीबाग (झारखण्ड)

सार–संक्षेप

'सतत् पोषणीय विकास', विकास का वह स्वरूप है जो पर्यावरण को न तो कोई नुकसान पहुंचाता है और न ही नवीन पर्यावरणीय बोझ आरोपित करता है। इसे पारिस्थितकीय विकास के नाम से भी जाना जाता है। सतत् विकास के पीछे स्पष्ट तौर पर यह मत है कि एक देश का संसाधन आधार तथा जलवायु और भूमि के स्रोत उस देश की सभी पीढ़ियों की संयुक्त संपत्ति है। अल्पकालिक लाभों के लिए इसका अप्रतिमानित दोहन अथवा विनाश करने का सीधा अर्थ यह है कि इस लाभ की प्राप्ति के मूल्य के रूप में अगली पीढ़ी अपने संसाधनों से वंचित होगी। यह स्पष्ट तौर पर उनके हितों का हनन है जो अनुचित है। अतः अगली पीढ़ी के लिए उचित मात्रा में संसाधनों की उपलब्धता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि सतत् विकास की संकल्पना को सरोकार किया जाय और संसाधनों उचित उपयोग किया जाय साथ ही साथ उसके नवीकरणीय उत्पादों और दुबारा उपयोग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

पर्यावरण और विकास के मध्य अत्यंत गहरा संबंध है। संसाधनों के लगातार दोहन से पर्यावरणीय क्षरण होने लगता है इससे संसाधनों में कमी भी आ जाती है जिससे विकास बाधित होने लगता है। इन कारणों से मानव के अस्तित्व पर भी खतरा मंडराने लगता है। इसके समायोजन के लिए सतत् विकास एक सटिक उपाय है। मानव संसाधन विकास को विकास की नीतियों और गतिविधियों के नियोजन में सावधानी बरतनी चाहिए। विकास के आर्थिक और पारिस्थिकीय आयामों के बीच समन्वय करने की आवश्यकता है।

मुख्यशब्द :

पर्यावरण, सतत् विकास, प्राकृतिक संसाधन, विदोहन, नैतिक अधिकार, सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य, एजेंडा 2030, महिला सशक्तिकरण, सार्वभौमिक विकास, समावेशी, पारिस्थितकीय, वायुमण्डल।

प्रस्तावना

इस पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति पुरापाषाण काल में मानी जाती है। इस काल में मानव अपने औज़ार और हथियार निर्मित करने के लिए पत्थर, लकड़ी तथा हड्डियों का प्रयोग करता था। उत्तर–पाषण काल में ऐसी मानव जातियाँ अस्तित्व में आ गयीं जो अपने हथियार बनाने के लिए हाथी दाँत, सींग और हड्डियों का प्रयोग करने लग गयीं। पाषाणकालीन मानव की प्रत्येक क्रिया पर्यावरण पर निर्भर थी। वस्तुतः इस काल में मानव अपने पर्यावरण के अनुरुप ही अपना जीवन व्यतीत करता था। पर्यावरण पर आधारित मानव की यह प्रकृत्ति प्रदत्त जीवन व्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन से पूर्णतः मुक्त थी। इसलिए इस प्रकार के विकास को संसाधनरहित विकास कहा जाता है लेकिन जैसे–जैस उत्तर पाषाणकाल में मानव ने आग का अविष्कार किया अपनी उदर पूर्ति के लिए पशुपालन और कृषि कार्य आरंभ किया। यहीं से उसने अपने जीवन–यापन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार मानव संसाधनरहित विकास से संसाधन सहित विकास की ओर अग्रसर हो गया।

अध्ययन पद्धति

सतत् विकास एक पर्यावरण क्षरण के लंबे काल को स्वयं में समाहित करता है इसलिए प्रस्तुत शोध–आलेख के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। सतत् पोषणीय विकास के विभिन्न अवधारणाओं के अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। साथ ही सतत् विकास के विभिन्न देशों की कार्यों के लिए तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का भी प्रयोग किया गया है।

पूर्ण–आलेख

पोषणीय विकास पर्यावरण से संबंधित एक आधुनिक अवधारणा है। पोषणीय विकास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1970 के कोकोयाक सम्मेलन में किया गया था; जिसमें पोशणीय विकास के बारे में कहा गया कि विकास योजनाओं को इस प्रकार क्रियान्वित किया जाये जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़े। वास्तव में पोषणीय विकास आर्थिक विकास तथा पर्यावरणीय आव यकताओं का संगम है। 1983 में नॉर्वे के प्रधानमंत्री जी0 एच0 बर्टलैण्ड की अध्यक्षता में संयुक्त राष्ट्र ने ब्रंटलैण्ड आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग द्वारा 1987 ई0 में प्रस्तुत हमारा साझा भविष्य प्रतिवेदन में पोषणीय विकास को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''पोषणीय विकास एक ऐसा विकास है जो भावी पीढ़ी की आव यकता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास है।''[1]

मानव इतिहास पिछले 200 वर्षों में एक ओर जहाँ एक ओर मानव जनसंख्या में लगभग 6 गुणी हुई है वहीं प्रतिव्यक्ति प्राकृतिक संसाधन के उपभोग के दर में भी तीव्र वृद्धि हुई है जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों पर मानव का दबाव अत्याधिक बढ़ गया है जबकि

प्राकृतिक संसाधनों की विगत अवधि में वृद्धि नगण्य है। जिसके कारण पृथ्वी के बहुत से प्राकृतिक संसाधनों के पूर्णतया समाप्त होने का समय निकट आ गया है। उपलब्ध सीमित प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण विदोहन करते समय मानव यह भूल गया कि प्रकृति के इन संसाधनों पर केवल वर्तमान पीढ़ी का ही अधिकार नहीं है वरन् उस पर भविष्य में आने वाली पीढ़ियों का भी नैतिक अधिकार है। वर्तमान में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का न केवल तीव्र गति से विदोहन किया है बल्कि कुछ सतत् या समाप्त न होने वाले प्राकृतिक संसाधन जैसे वायु, जल, मृदा का भी अविवेकपूर्ण ढ़ँग से प्रयोग कर पारिस्थितकीय तंत्र की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है जिसके कारण स्वयं मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लग गया है। इस संबंध में हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सारगर्भित कथन है कि, ''प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति की आव यकताओं की तो पूर्ति कर सकती है लेकिन वह प्रत्येक की लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।''[2]

एजेंडा 2030 और भारत

भारत सरकार ने पहली बार न्यूयार्क में जुलाई, 2017 में आयोजित होने वाले उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच पर स्वैच्छिक राष्ट्रीय समीक्षा करने का निर्णय लिया। यह वह मंच है जहाँ एजेंडा 2030 के अंर्तगत निर्धारित लक्ष्यों की प्रगति का आकलन किया जाता है। 2015 से संयुक्त राश्ट्र संघ की महासभा की 70वीं बैठक में अगले 15 वर्षों के लिए सतत् विकास लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं जिसे औपचारिक तौर पर सभी सदस्य देशों ने स्वीकार किया था।[3] यह सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य का हिस्सा है। इस सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य के अंतर्गत निम्न लक्ष्यों को शामिल किया गया है –

1. भूखमरी और गरीबी को समाप्त करना।
2. सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा सुनिश्चित करना।
3. लिंग आधारित समानता तथा महिला सशक्तिकरण को मजबूती प्रदान करना।
4. शिशु–मृत्यु दर को कम से कम करना।
5. मातृत्व स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए सतत् प्रयास करना।
6. एच0 आई0 वी0 एड्स, मलेरिया जैसे जानलेवा बिमारियों से निजात पाना।
7. पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जन साधारण को प्रेरित करना।
8. वैश्विक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूती प्रदान करना।

भारत ने निर्धारित लक्ष्यों में से एच0 आई0 वी0 एड्स, गरीबी, सार्वभौमिक शिक्षा और शिशु–मृत्यु दर के निर्धारक मानकों को 2015 तक प्राप्त कर लिया है जबकि अन्य लक्ष्यों की प्राप्ति में भारत अभी काफी पीछे है।[4]

सतत् विकास के लक्ष्य

ट्रांसफॉर्मिंग अवर वर्ल्ड : द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट को सतत् विकास लक्ष्य के नाम से जाना जाता है। भारत सहित 193 देशों ने सितम्बर, 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की उच्च स्तरीय पूर्ण बैठक में इसे स्वीकार किया। जिसके 8 लक्ष्य सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य से लिए गये हैं। जिसे व्यापक रूप से अपनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र के एजेंडा 2030 में कुल 17 लक्ष्यों का निर्धारण किया गया है जो निम्नलिखित हैं –

1. गरीबी के सभी प्रकारों की संपूर्ण विश्व से समाप्ति।
2. भूख समाप्ति, खाद्य सुरक्षा, बेहतर पोशण और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना।
3. सभी उम्र के लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा और स्वस्थ जीवन प्रत्याशा।
4. समावेशी एवं न्याय संगत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ–साथ सभी को सीखने का अवसर प्रदान करना।
5. लैंगिक समानता प्राप्त करने के साथ ही महिलाओं और लडकियों को सशक्त बनाना।
6. सभी के लिए स्वच्छता और पानी के सतत् प्रबंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
7. सस्ती, विश्वसनीय, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा तक पहुंच सुनिश्चित करना।
8. सभी के लिए निरंतर समावेशी और सतत् आर्थिक विकास, पूर्ण और उत्पादक रोज़गार और सभ्य कार्यों को बढ़ावा देना।
9. लचीली बुनियादी ढ़ांचे, समावेशी और सतत् औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना।
10. देशों के बीच और भीतर असमानता को कम करना।
11. सुरक्षित लचीला और टिकाऊ भाहर और मानव बस्तिओं का निर्माण।
12. स्थायी खपत और उत्पादन पैटर्न को सुनिश्चित करना।
13. जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभाव से निपटने के लिए तत्काल कार्यवाही करना।
14. स्थायी सतत् विकास के लिए महासागरों, समुद्र और समुद्री संसाधन का संरक्षण और उपयोग।
15. सतत् उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।
16. सतत् विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावे ाी समितियों को बढ़ावा देने के साथ ही सभी स्तरों पर इन्हें प्रभावी और जवाबदेह बनाना ताकि सभी के लिए न्याय सुनिश्चित हो सके।
17. सतत् विकास के लिए वैश्विक भागीदारी को पुनर्जीवित करने के अतिरिक्त कार्यान्वयन के साधनों को मजबूती प्रदान करना।

सतत् विकास की प्रमुख चुनौतियाँ

सतत् विकास की दिशा में भारत लंबे समय से प्रयास करता रहा है तथा इसके मूलभूत सिद्धांतों को अपनी विभिन्न विकास नीतियों में शामिल करते रहा है। भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत एजेंडा 2030

के एक लक्ष्य गरीबी दूर करने के उद्देश्य से सबसे निर्धन वर्ग के कल्याण को प्रमुखता प्रदान की गई है। सरकार द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे अनेक कार्यक्रम सतत् विकास के अनुरूप हैं जिनमें मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, डिजिटल इंडिया, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, स्किल इंडिया, कृषि सिंचाई योजना आदि शामिल हैं।

उपर्युक्त प्रयासों के बावजूद भारत सतत् विकास के लक्ष्य के अनुरूप संतोषजनक प्रगति नहीं की है। उसकी प्रमुख चुनौतियाँ इस प्रकार हैं –

1. सतत् विकास के लिए चुनौती के लिए जनसंख्या वृद्धि एक प्रमुख चुनौती है। जनसंख्या जितनी अधिक होगी, भौतिक वस्तुओं और अन्य संसाधनों का उपयोग भी उतना ही अधिक होगा। इससे संसाधनों की अनउपलब्धता का खतरा है। सतत् विकास तभी संभव है जब जनसंख्या और पारिस्थितकीय तंत्र की उत्पादक क्षमता में सामंजस्य हो।
2. भारत सरकार के द्वारा सतत् विकास के लक्ष्य के अनुरूप केन्द्र और राज्य सरकारों के मंत्रालयों के द्वारा योजनाओं और कार्यक्रमों की मैपिंग की गई है लेकिन जिला और स्थानीय सरकारों के स्तर पर कोई ढ़ांचा तैयार नहीं किया गया है।
3. वर्तमान में बढ़ते वायु प्रदूषण से वायुमण्डल में उष्मा अवरोधी गैसें – कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरो–फ्लोरोकार्बन, नाइट्रिक ऑक्साइड और मिथेन की मात्रा तेजी से बढ़ रही है जिससे हमारी पृथ्वी का वायुमण्डल भी एक हरित गृह के रूप में कार्य करने लगा है।[5] जिससे पृथ्वी गर्म हो गई है। जिससे जलवायु परिवर्तन सिकुड़ता ग्लेसियर, प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप बढ़ा है तथा जैव–विविधता में ह्रास हुआ है। पिछले 15 वर्षों में गंगोत्री हिमनद का लगभग एक–तिहाई भाग विलुप्त हो गया है।
4. औद्योगिक और नगरीय क्षेत्रों में उद्योगों, वाहनों तथा ताप विद्युत–गृहों में जीवाश्म ईंधन जलने से वायुमण्डल में सल्फर और नाइट्रोजन के ऑक्साइड छोड़े जाते हैं। जब वायुमण्डल में सल्फर और नाइट्रोजन की उपस्थिति में वर्षा होती है तो यह सल्फ्यूरिक एसिड बनकर भूपटल पर गिरते हैं। यह अम्लीय वर्षा जलीय जीवों और वनस्पतियों पर घातक प्रभाव डालते हैं तथा ऐतिहासिक महत्व की इमारतों पर भी बूरा प्रभाव पड़ता है। इसके प्रभाव के कारण ताजमहल की सुंदरता में गिरावट आयी है।
5. ओज़ोन परत सूर्य की हानिकारक पाराबैगनी किरणों से पृथ्वी के जीवमण्डल को सुरक्षित रखती है। वर्तमान में मानव ने अपनी सुरक्षा कवच ओज़ोन परत को अविवेकपूर्ण क्रियाकलापों से क्षत–विक्षत कर दिया है। पराबैगनी किरणों के प्रभाव से मानव शारीर की त्वचा और आंखों की कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त होने लगी है। जिससे भारत में त्वचा कैंसर और आंखों की बीमारियाँ बढ़ गई हैं।[6]
6. भारत में तेजी से बढ़ती जा रही जनंसख्या ने अपशिष्ट पदार्थों के निष्काषण की मात्रा को तेजी से वृद्धि किया है जो सतत् विकास की एक चुनौती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत को यदि सतत् विकास के लक्ष्य को हासिल करना है तो इस प्रकार की नीति बनानी पड़ेगी जो सभी क्षेत्रों में क्रियान्वित नीतियों से सामंजस्य स्थापित करती हो साथ ही प्रशासनिक और छोटे स्तर पर इन नीतियों के सफल क्रियान्वन के लिए सामंजस्य और भागीदारी पर ध्यान देना होगा। हमारे संघात्मक ढ़ांचे में सतत् विकास के लक्ष्य की संपूर्ण सफलता में राज्यों की सकारात्मक भूमिका महत्वपूर्ण है। राज्यों की विभिन्न नीतियों और योजनाओं को सतत् विकास के लक्ष्य के साथ उचित ताल–मेल होना चाहिए और केन्द्र तथा राज्य सरकारों को सतत् विकास लक्ष्य के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. गर्ग; डॉ0 एच0 एस0 : पर्यावरण अध्ययन, एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, 189.
2. गर्ग; डॉ0 एच0 एस0 : पर्यावरण अध्ययन, एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, 190.
3. आर्थिक सर्वे, 2018.
4. दैनिक जागरण, 24 फरवरी, 2018.
5. गर्ग; डॉ0 एच0 एस0 : पर्यावरण अध्ययन, एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, 200.
6. गर्ग; डॉ0 एच0 एस0 : पर्यावरण अध्ययन, एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिकेशन्स, आगरा, 2021, 202.